पर्यटन के विविध आयाम (भारतीय पर्यटन उद्योग के समक्ष चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ)

ऐतिहासिक स्थलों का पर्यटन के विकास में महत्व : एक ऐतिहासिक अध्ययन

(राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

पत्तीराम
सहायक आचार्य : इतिहास
राजकीय कन्या महाविद्यालय बड़ौदा मेव, अलवर (राज.)

शोध सारांश

राजस्थान राज्य में पर्यटन के लिए ऐसे ऐतिहासिक युद्ध स्थल, दुर्ग, प्राकृतिक स्थान हैं जिनको हर वर्ष हजारों की संख्या में विदेशी सैलानी देखने आते हैं। ऐतिहासिक स्थलों का अध्ययन कर हम उनके पुराने स्थलों को पर्यटन का केंद्र बनाकर हमारे आर्थिक विकास में सहयोगी बना सकते हैं क्योंकि, हमारे राज्य में ऐसे दुर्ग, किले हैं जो लगभग 15 से 30 किलोमीटर की दूरी पर मिल जाते हैं। जिनकी कलाकृति, नक्काशी, प्राचीनता व सुंदरता को देखने विदेशों से पर्यटक हमारे देश में हर वर्ष हजारों की संख्या में आते हैं। सरकार को भी इन स्थलों को संरक्षण देकर स्थानीय लोगों को लघु उद्योगों के लिए सहायता देनी चाहिए।

प्रस्तावना :–

मानव को ईश्वर ने इस प्रकार बनाया है कि वह सुंदर व स्वच्छ आकाश, पृथ्वी एवं पृथ्वी पर प्राकृतिक सौंदर्य एवं मानव निर्मित सुंदर वस्तु, जगह, स्थान, स्थापत्य कला, ऐतिहासिक स्थल आदि को देखने की हमेशा लालसा रखता है, जो जीवन पर्यन्त पूर्ण नहीं होती।

विश्व में अनेकों ऐतिहासिक स्थल ऐसे हैं, जिन्हें देखने की अभिलाषा बनी रहती है। संसार के ऐसे देशों में जहाँ देखने योग्य स्थल हैं। उन देशों में भारत का नाम भी अग्रणीय रूप से आता है। भारत के ऐसे राज्य जिनमें देखने योग्य ऐतिहासिक स्थान हैं। ऐसे राज्यों में राजस्थान राज्य का नाम भी शुमार होता है। राजस्थान राज्य में पर्यटन के लिए ऐसे ऐतिहासिक युद्ध स्थल, दुर्ग, प्राकृतिक स्थान हैं जिनको हर वर्ष हजारों की संख्या में विदेशी सैलानी देखने आते हैं।

विदेश से राजस्थान में आने वाला कोई भी सैलानी यहाँ से वापस नहीं जाना चाहता। उसकी दृष्टि राजस्थान के स्थापत्य, शिल्प और हस्तकला आदि के उत्कृष्ट नमूनों को देखकर ठहर–सी जाती है। वह आश्चर्यचकित हो उठता है जब उसकी दृष्टि में एक अतीत, वर्तमान और वर्तमान, भविष्य होने लगता है। पर्यटक की नजर कहीं बंधकर टूट नहीं पाती। आकर्षक शहरों, दुर्गों, महलों और कलागत विशेषताओं के राजस्थान में सैलानियों की परिष्कृत रुचियों के अनुकूल ऐसे अनेकानेक दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल भी हैं। राजस्थान के शहर अपनी विशिष्टता के कारण लोकप्रिय, अपनी बसावट, अपने किलों एवं द्वारों के लिए जगत विख्यात रहे हैं।

जयपुर के पर्यटनस्थल :–

'मरू प्रांत की विभूति, भारत का नयन तारा, नगरों का बादशाह है, जयपुर नगर हमारा।' गुलाबी नगर जयपुर जैसा नगर बसावट की दृष्टि से दूसरा नहीं मिलेगा। यह आयताकार रूप में चारों और पहाड़ों से घिरा व चारों ओर पक्के बने परकोटे से सुरक्षित रूप से बसा है। जयपुर का पूर्व नाम जयनगर था। विश्व विश्रुत जयपुर 'नगरों का बादशाह', 'भारत का पेरिस', 'पिंकसिटी', 'सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र', 'बसावट में लासानी' और 'एक बेमिसाल नगर' आदि विशेषणों से अलंकृत रहा है।[1] सवाई जयसिंह ने जयपुर नगर की नींव 18 नवंबर, 1727 ई. को रखी और निर्माण कार्य विद्याधर भट्टाचार्य की देखरेख में संपन्न कराया गया। इसका परकोटा लगभग सत्ताईस फुट ऊँचा और नौ फुट चौड़ा, नौ दरवाजे, चांदपोल, अजमेरी गेट, किशनपोल, नया दरवाजा, सांगानेरी गेट, घाटगेट, सूरजपोल, गंगापोल, ध्रुवपोल आदि हैं। इसकी प्रमुख सड़कें 111 फीट चौड़ी व गलियों की सड़क 25 फीट है। सभी समकोण पर काटती हैं। सन् 1732 ई. में जयपुर पूर्णतया तैयार हो गया और जयनगर तथा 'सवाई जयपुर' नामों से संसार में चर्चित हुआ।

जयगढ़ :– विश्व की सबसे बड़ी तोप इसी किले में है। **जयमहल :–** मानसागर झील में बना है। **(जंतर–मंतर) :–** भारत की 5 वैद्यशालाओं में सबसे बड़ी है। आमेर महल मान सिंह द्वारा बनाया गया। **हवामहल :–** सवाई प्रताप सिंह द्वारा निर्मित। **सिटी पैलेस :–** सवाई माधोसिंह द्वितीय ने बनवाया। **रामनिवास बाग :–** राम सिंह द्वारा निर्मित। **गलता जी :–** यह जयपुर का बनारस कहलाता है। **गेटौर की छतरियाँ :–** शासकों का शमशानघाट। बिड़ला मंदिर, विद्याधर बाग वास्तुविद् नगर नियोजक विद्याधर भट्टाचार्य की स्मृति में बना। विराटनगर, अजायबघर आदि।

बीकानेर :– इसकी स्थापना बीकाजी द्वारा बैसाख सुदी द्वितीया शनिवार संवत् 1545 (13 अप्रैल, 1488 ई.) को की गई।

''परने सौ पैंताल्वे सुद बैसाख सुमेर, थावर बीज थरपिए, बीके बीकानेर।''

(पर्यटन स्थल) :– गंगा निवास, कोलायत – महर्षि कपिल की तपोभूमि, करणी माता मंदिर (देशनोक), मुकाम, तालवा, नोखा–गुरू जंभेश्वर की तपोभूमि, जुनागढ़ किला आदि। यह सावन में वर्षा के होने पर सुहावना लगता है ''सियालों खाटू भलो, उनाले, अजमेर, जोधाणे नित से भला, सावण बीकानेर।''[2]

जोधपुर :– इसकी स्थापना राव जोधा ने 1459 ई. में की। इसे 'सूर्य नगरी' कहते हैं।

(पर्यटन स्थल) :– मेहरानगढ़ दुर्ग, जसवंत थड़ा, उम्मेद भवन, मंडोर, औसियाँ– यहाँ सूर्य मंदिर, हरिहर मंदिर, संचिया माता का मंदिर। खींचन गाँव– अप्रवासी कुरंजा पक्षियों के लिए।[3] राजमहल, गंगाश्याम मंदिर, 100 स्तंभों पर टिकी छत वाला मंदिर, बालसमंद, सरदार समंद, कायलाना झील आदि।

जैसलमेर :– इसकी स्थापना जैसल ने 14 जुलाई, रविवार सन् 1155 में श्री त्रिकुट पर्वत पर दुर्ग बना कर की। 'स्वर्णनगरी' के उपनाम से प्रसिद्ध है। इसको 'म्युजियम सिटी' भी कहते हैं।

(पर्यटन स्थल) :– सोनार किला, पटवों की हवेली, लौद्रवा, राष्ट्रीय मरूउद्यान, रामदेवरा, सालम सिंह की हवेली, दीवान मेहता, नथमल की हवेली। जैसलमेर की चार बातें प्रसिद्ध है– 'गढ़, झरोखा, गोठवा, चौथी सुंदर नार।'

श्रीगंगानगर :– इसे बीकानेर के शासक महाराजा गंगा सिंह ने बसाया। शायर यूसुफ झुंझनवी के शब्दों में 'जिस पे चमक नहीं वह चेहरा क्या ? और मर्द की तो गर्द भी अच्छी, नामर्द से दोस्ती भी क्या ?'[4]

(पर्यटन स्थल) :– गुरूद्वारा बुड्ढ़ा जोहड़, सूरतगढ़ तापीय विद्युत परियोजना, राष्ट्रीय कला मंदिर आदि।

उदयपुर :– इसकी स्थापना महाराणा उदयसिंह द्वारा सन् 1568 में की गई। इसको 'झीलों की नगरी', 'राजस्थान का कश्मीर' एवं 'पूर्व का वेनिस' कहा जाता है। कविता–'किसने दिये इस शहर को इतने–इतने रंग और किस लिए ?'

(पर्यटन स्थल) :– सिटी पैलेस, पिछौला झील, जगमंदिर, जगनिवास महल, बाड़ी, जयसमंद, एकलिंग जी का मंदिर, नागदा, आहड़, गिलुंडा, चाँवड बांडोली, केसरिया नाथ जी आदि।

चित्तौड़गढ़ :– 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैया'

यहाँ महाभारतकाल में पांडव ठहरे थे। उनके नाम पर 'भीमगोड़ी' और 'भीमताल' दो जलाशय आज भी मौजूद है।

(पर्यटन स्थल) :– चित्तौड़गढ़ का किला, विजयस्तंभ–इसे 'भारतीय कला का विश्वकोष' कहते हैं। कीर्तिस्तंभ, फतेहप्रकाश महल, नगरी, गोमतेश्वर, सांवलियाजी का मंदिर, मातृकुण्डिया, भंवर माता, आवरी माता आदि।

झालावाड़ :– इसकी स्थापना सन् 1838 में जालिमसिंह झाला ने की।

(पर्यटन स्थल) :– झालरापाटन– सूर्य मंदिर, सात सहेलियों का मंदिर, गागरोण दुर्ग, कौलवी की गुफाएँ व बौद्ध स्तूप, कांकूनी आदि।

बाँरा (पर्यटन स्थल) :– भिण्ड देवरा के मंदिर, सीताबाड़ी, अटरू आदि।

अजमेर :– इसकी स्थापना अजयपाल ने 7वीं सदी में की।

(पर्यटन स्थल) :– दरगाह, अढ़ाई दिन का झोपड़ा– इसका निर्माण विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) ने 1153 में संस्कृत पाठशाला के रूप में किया। बाद में कुतुबुद्दीन ने इसे अढ़ाई दिन का झोंपड़ा बना दिया।[5] तारागढ़ दुर्ग, सोनीजी की नसियाँ, आनासागर झील, पुष्कर।

सवाई माधोपुर :– इसकी स्थापना सवाई माधोसिंह द्वारा 19 जनवरी, 1763 ई. में की गई।

(पर्यटन स्थल) :– रणथंभौर का किला, गणेश मंदिर एवं रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान आदि।

करौली :– इसकी स्थापना बिजई पाल जादोन द्वारा 955 ई. में की गई। इसका प्राचीन कल्याणपुरी था।

(पर्यटन स्थल) :– कैलादेवी मंदिर एवं श्री महावीर जी।

अलवर :– इसकी स्थापना 25 दिसंबर 1775 ई. में राव प्रताप सिंह ने की। इसे राजस्थान का 'सिंहद्वार' कहते हैं।

(पर्यटन स्थल) :– मूसी महारानी की छतरी, सिलीसेढ़ झील व महल, सरिस्का, पांडूपोल आदि।

जालौर : इसे 'ग्रेनाइट शहर' कहते हैं।

(पर्यटन स्थल) : जालौर दुर्ग, सांचौर–इसे 'राजस्थान का पंजाब' कहते हैं। भीनमाल–सुण्डा देवी का मंदिर।

सिरोही : इसका नाम सिरानवाहिल पर पड़ा।

(पर्यटन स्थल) : माऊंटआबु–देलवाड़ा के जैन मंदिर, अचलगढ़, अर्बुदा देवी का मंदिर, नक्की झील, सनसेट प्वाइंट, हनीमून प्वाइंट, चंद्रावती आदि।

राजसमंद (पर्यटन स्थल) :– कुंभलगढ़ दुर्ग, कटारगढ़, हल्दीघाटी, अंबिका माता का मंदिर, नाथद्वारा, राजसमंद झील, कांकरौली – 'द्वारकाधीश नाम से प्रसिद्ध है।'

भरतपुर :– इसकी नींव 1733 ई. में सूरजमल जाट ने रखी। इसे 'राजस्थान का पूर्वी द्वार' कहते हैं।

(पर्यटन स्थल) :– लोहागढ़ दुर्ग, केवलादेव घना पक्षी विहार, गंगा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर आदि।

पाली (पर्यटन स्थल) : बाली जैन मंदिर, रणकपुर–नेमीनाथ मंदिर एवं वैश्याओं का मंदिर।

बाँसवाड़ा :– इसकी स्थापना महारावल जगमल सिंह ने की। इसे 'सौ द्वीपों' का शहर कहा जाता है।[6]
(पर्यटन स्थल) :– माही बांध, कालिंजरा – जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध।

हनुमानगढ़ (पर्यटन स्थल) :– कालीबंगा, भटनेर किला– इसका निर्माता भाटी भूपत था।

भीलवाड़ा :– इसे 'टेक्सटाइल' सिटी कहते हैं।
(पर्यटन स्थल) :– मांडल, बिजोलिया, शाहपुरा–मेनाल–नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर है।

झुंझुनू (पर्यटन स्थल) :– लोहार्गल, नरहड़ दरगाह, खेतड़ी, बाजोर का किला, भटियानी का मंदिर, पिलानी, रामकृष्ण मिशन का मठ।

सीकर (पर्यटन स्थल) : हर्षनाथ मंदिर, जीणमाता का मंदिर, खाटू श्यामजी का मंदिर, गणेश्वर टीला।

चुरू (पर्यटन स्थल) : कोठारी हवेली, ढ़ोला मारू के चित्र, छः मंजिला खुराणा हवेली, तालछापर वन्य जीव अभयारण्य, सालासर बालाजी का मंदिर।

शेखावटी (सीकर–झुंझुनू–चुरू) : राजस्थान की ऑपन एअर आर्ट गैलरी, हवेलियाँ–फ्रेस्को पेंटिंग प्रसिद्ध है। यह औद्योगिक क्षेत्र की रीढ़ है।

निष्कर्ष :–

आज के समय में पर्यटन को इतिहास से बहुत कुछ विकास में सहायता मिली है। ऐतिहासिक स्थलों का अध्ययन कर हम उनके पुराने स्थलों को पर्यटन का केंद्र बनाकर हमारे आर्थिक विकास में सहयोगी बना सकते हैं। क्योंकि हमारे राज्य में ऐसे दुर्ग, किले जो लगभग 15 से 30 किलोमीटर की दूरी पर मिल जाते हैं। जिनकी कलाकृति, नक्काशी, प्राचीनता व सुंदरता को देखने विदेशों से पर्यटक हमारे देश में हर वर्ष हजारों की संख्या में आते हैं। सरकार को भी इन स्थलों को संरक्षण देकर स्थानीय लोगों को लघु उद्योगों के लिए सहायता देनी चाहिए तथा अपने प्राचीन स्थलों की देख–रेख कर उनको किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. आर्कियोलोजिकल म्यूजियम सांची, आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1981, पृ.03
2. स्मारकों का इतिहास एवं स्थापत्य कला, डॉ. रतन लाल मिश्र, ईना श्री पब्लिशर्स, जयपुर, 1998, पृ 139
3. उजले अतीत का विकसित वर्तमान– राजस्थान, तारादत्त निर्विरोध, युनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा. लि. जयपुर, 2002, पृ.16,17,30,31 एवं 43
4. राजस्थान–भूगोल, अर्थव्यवस्था, इतिहास, कला एवं संस्कृति, संजय गुप्ता एवं नीना गुप्ता, अभिनव प्रकाशन अजमेर, 2009, पृ. 153
5. जैसलमेर की सांस्कृतिक धरोहर, डॉ. रघुवीर सिंह भाटी, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, 2010, पृ. 35
6. मध्यकालीन भारत का इतिहास, डॉ. बी.एल. गुप्ता एवं डॉ. पेमाराम, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, 1992, पृ. 226